ओम शान्ति 29-12-13 मधुबन

रविवार अमृतवेले योग के पश्चात - दादी जानकी जी के उद्‌गार

ओम शान्ति, गुडमॉर्निंग। आज सण्डे है। क्या अनुभव सुनाऊं, ज्ञान-सूर्य ज्ञान-चन्द्रमा के साथ हम चमकते हुए सितारे बैठे हैं। कितनी सुन्दर रौनक लगी हुई है। ज्ञान-सूर्य के सामने प्रकाश तो है परन्तु सकाश भी बहुत मिल रही हैं, चन्द्रमा बहुत शीतल बना रहा है। बाबा जब मुरली में भक्ति मार्ग और ज्ञान मार्ग का कान्ट्रास्ट सुनाते हैं तो। सारा कान्ट्रास्ट संगम पर वण्डरफुल अनुभव होता है, कहाँ भक्ति मार्ग है, उसमें भी खुश थे। पूर्णमासी के दिन सारा दिन वृत रखके दिन में सत्यनारायण की कथा सुनेंगे, रात को चन्द्रमा को देखेंगे फिर खाना खायेंगे। बहुत अच्छा लगता था। कथा भी ब्राह्मण सुनाये। ज्ञान मार्ग में सम्पूर्ण बनना है ना, कितना बड़ा वृत रखा है बाबा ने। ताकि मेरे बच्चे चमकते हुए स्टार देख किसके हैं, कौन है इसका साक्षात्कार होता जाये। बाबा लेटेस्ट मुरलियों में यह रिमाइण्ड करा रहा है कि जैसे शुरु में ब्रह्मा बाबा द्वारा साक्षात्कार होते थे अभी हम बच्चों द्वारा बाप का साक्षात्कार हो। कितनी सुन्दर दृश्य है। सब बातों को भूल, मुझे तो याद नहीं आती है, बहुत मजा आता है। बाबा की बातों को याद कर, याद के द्वारा ही लव में लीन होते हैं। ऐसी याद प्यार बाबा कहता स्वीकार हो। तो हम स्वीकार करने के लिए अपने आपको देखें कैसे बैठे हैं।

यह जो ड्रामा अनुसार नियम बना है, खींच होती हैं सण्डे की और गुरुवार को। परिवार से मिलन मनाने की। आज तो बहुत अच्छा निराला अनुभव था, अनुभव से ही जो बाप से पाया है वो सूक्ष्म वृत्ति द्वारा, वायब्रेशन द्वारा कैसे काम कर रहे हैं बाबा! हम गुल्जार दादी द्वारा अव्यक्त बाबा के महावाक्य सुनते हैं, फिर हम मुलाकात करते बाबा से अमृतवेले तो सारा दिन यही तात-लात है और कोई बात है नहीं। सच्चाई प्रेम विश्वास की कमाल है। बाबा ने सच्चाई प्रेम विश्वास से आदि से अब तक हर सेकेण्ड और श्वास को कैसे सफल करो सिखाया है। बाबा अव्यक्त साकार निराकार, अव्यक्त में साकार समाया हुआ है साकार में अव्यक्त बनने के लिए क्या मेहनत की, आँखों से देखा। इन आँखों से देखा तो इन नयन में बाबा के दृश्य, केवल साक्षात्कार निमित्त नही पर रियली नजरों में समाये हुए हैं। ओम शान्ति।